पृथ्वी का चुंबक पलटता भी है

यह तो सभी जानते हैं कि हमारी पृथ्वी एक चुंबक की तरह व्यवहार करती है। इसीलिए जब एक छड़ चुंबक को लटकाया जाता है तो हर बार वह उत्तर-दक्षिण दिशा में ही ठहरता है। यह चुंबकीय गुण नाविकों के लिए दिशा ज्ञान में अत्यंत उपयोगी रहा है। मगर यह बात शायद बहुत कम लोग जानते हैं कि पृथ्वी के चुंबकीय उत्तर व दक्षिण कई बार पलट भी जाते हैं। और शायद उससे भी कम लोग यह जानते होंगे कि कभी-कभी यह उलट-पलट बहुत तेज़ी से होती है।

विभिन्न अध्ययनों से यह बात उजागर हो चुकी है कि पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र की दिशा हर 3 लाख साल में एक बार पलटती है। आम तौर पर इस घटना में 5000 साल का समय लगता है। मगर करीब 1.6 करोड़ वर्ष पूर्व पृथ्वी के चुंबकीय ध्रुवों में बदलाव मात्र चंद वर्षों में पूरा हो गया था।

पृथ्वी के केंद्रीय भाग में चल रही संवहन धाराओं के कारण चुंबकत्व पैदा होता है। इसके बारे में हम जितना जानते हैं, उसके आधार पर इतनी तेज़ी से उलट-पलट संभव नहीं लगती। मगर इस तरह की त्वरित उलट-पलट के प्रमाण एक बार नहीं दो बार मिले हैं। 1995 में ओरेगन में लावा भंडार के अध्ययन के आधार पर पता चला था कि जब यह लावा बहा था, उस समय मात्र एक दिन में पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र 6 डिग्री घूम गया था। यह रफ्तार सामान्य से 10,000 गुना ज़्यादा है।

अब युनाइटेड स्टेट्स जियोलॉजिकल सर्वे के स्कॉट बॉग और उनके साथियों ने नेवाडा में इसी तरह का एक और प्रमाण खोजने का दावा किया है। *जियोफिज़िकल रिसर्च लेटर्स* में प्रकाशित शोध पत्र में उन्होंने बताया है कि वहां मौजूद लावा चट्टानें दर्शाती हैं कि पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र एक वर्ष में 53 डिग्री घूमा होगा। इस रफ्तार से पूरे पलट में मात्र 4-5 साल का समय लगा होगा। अलबत्ता, अन्य विशेषज्ञों का कहना है कि हो सकता है कि यह एक स्थानीय घटना रही हो या एक स्थिर धीमी गति से चल रहे परिवर्तन के दौरान अचानक झटके की द्योतक भी हो सकती है।

कई लोग बता रहे हैं कि पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र के पलटने का समय आ गया है और यह मनुष्यों के अलावा पक्षियों वगैरह के लिए भी परेशानी का सबब बन सकता है। ***(स्रोत फीचर्स)***